अर्थ परिवर्तन के कारण

(1) लाक्षणिक प्रयोग - भावों और अनुभूतियों की सरल, सुन्दर एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए लक्षणा शक्ति का आश्रय लिया जाता है। इसके लिए अनेक प्रकार अपनाए जाते हैं। जैसे—

✓(क) सादृश्य-मूलक वर्णन - निर्जीव में भी मानवीय अंगों का वर्णन। नारियल की आँख, आरी के दाँत इत्यादि।

(ख) गौण-प्रयोग:- गुण-साम्य के आधार पर प्रयोग। सुन्दर कल्पना, कटु सत्य, नीरस भाषण इत्यादि।

(ग) गुण साम्य मूलक प्रयोग — गुणों की समानता के आधार पर ऐसे प्रयोग होते हैं। गुणग्राही को हंस, खुशामदी को कुत्ता आदि।

(घ) कृतियों के लिए लेखक का नाम :- कालिदास, अश्वघोष आदि पर शोध-कार्य करता हूँ। इसमें कालिदास आदि से उनकी कृतियों का अभिप्राय है।

(2) परिवेश अथवा वातावरण में परिवर्तन :— परिवेश में परिवर्तन हो जाने पर भी अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। यह तीन प्रकार का होता है:—

✓(क) भौगोलिक परिवेश-भेद — भौगोलिक परिवेश में भेद के कारण शब्दों के अर्थ में अन्तर हो जाता है। वेद में 'उष्ट्र' शब्द 'भैंसा' के अर्थ में है। बाद में उष्ट्र का प्रयोग 'ऊँट' के अर्थ में होने लगा। इसका कारण आर्यों का भौगोलिक स्थान-परिवर्तन ज्ञात होता है।

(ख) सामाजिक परिवेश-भेद — एक ही समाज में एक ही शब्द को समाज-भेद से विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी के 'मदर', 'सिस्टर' आदि शब्द विभिन्न सामाजिक वातावरण में भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। परिवार में ये माता एवं बहन के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। अस्पताल में 'मदर' मैट्रन के लिए और 'सिस्टर' नर्स के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

(ग) भौतिक परिवेश-भेद:— अंग्रेजी में Glass (ग्लास) शब्द काँच के लिए है। अंग्रेजी में शीशा या दर्पण को Glass या Looking glass कहते हैं। पहले गिलास काँच का बना। अतः उसे ग्लास (गिलास) कहा गया। परन्तु अब अर्थ-विस्तार होने से धातु या प्लास्टिक आदि के बने पात्र को भी गिलास कहा जाता है।

(3) विनम्रता-प्रदर्शन — विनम्रता-प्रदर्शन के कारण भी अर्थ-परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के लिए — यदि कोई किसी से पूछता है कि आपका दौलतखाना कहाँ है तो इसमें 'दौलतखाने' का अर्थ धन या भंडार न होकर 'घर' से ही है। इसी प्रकार उत्तर देने वाला अपने घर के लिए 'गरीबखाना' या कुटिया आदि शब्दों का प्रयोग करता है। इस प्रकार से इन शब्दों के अर्थ परिवर्तित हुए हैं।

(4) सुश्लक्षता — सुश्लक्षता का अर्थ है, जो सुनने में अच्छा लगे। इसी को कुछ भाषा वैज्ञानिक 'अशोभन के लिए शोभन का प्रयोग' उपाधि देते हैं। इन्हें निम्न विभागों में बाँटा जा सकता है :—

(क) अशुभ या बुरा — अशुभ कार्यों, घटनाओं या बातों को हम घुमा-फिराकर अच्छा बना कर कहना पसन्द करते हैं। किसी के मर जाने पर गंगा लाभ करना, स्वर्गवासी होना आदि कहा जाता है।

(ख) अश्लील — कुछ लोग अश्लील को छिपाने के लिए घुमा-फिराकर अच्छे शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे — परलोक जाने के लिए मैदान जाना, दिशा जाना, नदी जाना आदि कहते हैं।

(ग) कटुता या गम्भीरता — गम्भीर मनुष्य को प्रिय नहीं लगता है। यही कारण है कि 'साँप' को 'कीड़ा' या 'रस्सी' कहते हैं।

(घ) अंधविश्वास :— कई समाजों में पति, पत्नी, गुरु और बड़े लड़के का नाम लेना पाप समझा जाता है। पति के विषय में यह नियम सर्वाधिक कठोरता के साथ लागू किया जाता है। अन्य संबोधनों से ही पति को सम्बोधित करते हैं।

(5) व्यंग्य :— यहाँ व्यंग्य 'आभरणी' का पर्याय है, जिसका अर्थ होता है किसी पर आक्षेप करना। किसी की बुद्धि हीनता पर 'तुम साक्षात बृहस्पति हो' आदि वाक्य व्यंग्य के उद्देश्य से ही बोले जाते हैं।

(6) भावात्मक बल — भावात्मक बल के कारण अनेक शब्दों के अर्थ में परिवर्तन पाया जाता है। 'राम-राम! उसने यह कैसे यह काम किया' इस वाक्य में 'राम-राम' धिक्कार का वाचक है।

(7) सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग — कभी-कभी पूरे वर्ग के लिए उसी वर्ग की एक वस्तु का प्रयोग किया जाता है। यह

वस्तुतः अर्थ-विस्तार का ही एक रूप है। जैसे, 'सब्जी' शब्द का प्रयोग केवल सब्ज (हरी) तरकारियों के लिए ही होना चाहिए; किन्तु उससे सभी तरकारियों का बोध होता है।

(8) अज्ञान अथवा भ्रान्ति → कभी-कभी अज्ञानावस्था में शब्दों के प्रयोगों में अर्थ-परिवर्तन हो जाता है। ऐसा कभी-कभी भ्रान्ति के कारण भी होता है। एक सम्पन्न व्यक्ति ने, जो कब्ज से परेशान थे, सिविल सर्जन को बुलाया और पत्र लिखवा कि 'माइ लैट्रिन इज नॉट क्लीन'। उन्हें 'लैट्रिन' शब्द का अर्थ नहीं मालूम था, यह स्पष्ट है।

(9) शब्दार्थ में अन्तर्निहित अनिश्चितता — किसी भी भाषा में बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जिनके अर्थ सुनिश्चित नहीं होते। अमूर्त भावों के वाचक शब्द प्रायः इस कोटि में आते हैं। गुलाब या अनार की ओर संकेत कर जितनी आसानी से इन शब्दों का अर्थ बताया जा सकता है, उतनी आसानी से न्याय, घृणा, दया, ईश्वर आदि शब्दों का नहीं। इसीलिए देखा जाता है कि जहाँ किसी दूसरे शब्द का प्रयोग अधिक संगत होता है, वहाँ प्रयोक्ता दूसरे शब्द का प्रयोग कर देता है।

(10) व्यक्तिगत योग्यता — व्यक्तिगत योग्यता के अनुसार भी शब्दों के अर्थ में परिवर्तन संभव होता है। इस पर व्यक्ति के संस्कार, शिक्षा, परिवेश आदि सभी का प्रभाव पड़ता है। 'बुद्धू' का अर्थ ज्ञानी के लिए कुछ, पढ़-लिखे के लिए कुछ और अनपढ़ के लिए कुछ और ही होता है।

(11) शब्दार्थ के एक तत्त्व की प्रमुखता — कभी-कभी शब्द के पूरे अर्थ को ध्यान में न रखकर उसके किसी एक तत्त्व को ही प्रधानता देकर प्रयोग चल पड़ता है। जैसे- पुलिस के लिए 'लाल पगड़ी' शब्द का प्रयोग। पुलिस केवल लाल पगड़ी ही नहीं पहनती, पर 'लाल पगड़ी' का प्रयोग पुलिस के लिए प्रसिद्ध हो गया है।

(12) साहचर्य के कारण गौण अर्थ की प्रमुखता — विदेश से जब पहले-पहल तम्बाकू इस देश में आया तो सूरत बन्दरगाह पर उतरा और वहीं से

सारे देश में उसका प्रसार हुआ। सूरत के सादृश्य के कारण तम्बाकू का नाम 'सुरती' पड़ गया। नमक को 'सैन्धव' सादृश्य के आधार पर ही कहते हैं; क्योंकि उनका संबंध सिन्धु से रहा है।

उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त अर्थ-परिवर्तन के अन्य अनेक कारण भी हैं। जैसे:- पीढ़ी-परिवर्तन:- पत्र आरम्भ में पत्ते पर लिखा जाने के कारण आज भी इसे पत्र कहते हैं। नवीन वस्तुओं के निर्माण एवं प्रचलन होने से भी अर्थ-परिवर्तन होता है। जैसे- 'पेन' शब्द का प्रयोग कलम के लिए होता है, जो पंख की बनी होती थी, किन्तु अब लोहे की भी कलमें 'पेन' ही कहलाती हैं। असाधारण लम्बाई वाले शब्दों के लिए छोटे शब्दों का प्रयोग - नेकटाई के लिए टाई आदि।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि अर्थ-परिवर्तन का कोई एक तथा सुनिश्चित कारण नहीं है। अर्थ-परिवर्तन के आन्तरिक और बाह्य, मानसिक और भौतिक अनेक कारण सम्मिलित रूप से कार्य करते हैं जिनकी परिणति अर्थ-विकास में पाई जाती है।

— x —